ईहा यस्य हरेर्दास्ये कर्मणा मनसा गिरा।
निखिलास्वप्यवस्थासु जीवन्मुक्तः स उच्यते।।

शरीर, मन, बुद्धि तथा वाणी से निरन्तर कृष्णभावनाभावित कर्म (श्रीकृष्णसेवा) परायण महात्मा प्राकृत क्रियाओं में संलग्न प्रतीत होने पर भी वास्तव में इस प्राकृत जगत् में भी जीवन्मुक्त है। उसमें मिथ्या अहंकार नहीं रहता। वह इस प्राकृत देह में अहंता-ममता नहीं रखता। उसे बोध हो जाता है कि स्वरूप से वह इस देह से भिन्न है और यह देह भी उसकी नहीं है। उसके तथा उसकी देह के श्रीकृष्ण ही एकमात्र स्वामी हैं। देह, मन, बुद्धि, वाणी, जीवन, धन, आदि सम्पूर्ण स्वत्व को श्रीकृष्णसेवा में समर्पित करने पर वह तत्क्षण श्रीकृष्ण से युक्त हो जाता है। श्रीकृष्ण में तन्मय पुरुष देह में आत्मबुद्धि करने वाले मिथ्या अहंकार से मुक्त रहता है। यही कृष्णभावना की पूर्णावस्था है।

17/7

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तां निबध्यते।।१२।।

युक्तः=भक्तियोगी; **कर्मफलम्**=सम्पूर्ण कर्मफल को; **त्यक्त्वा**=त्यागकर; **शान्तिम्**=पूर्ण शान्ति को; **आप्नोति**=प्राप्त होता है; **नैष्ठिकीम्**=अचल; **अयुक्तः**=कृष्णभावनामृतशून्य; **कामकारेण**=कर्मफल भोगने के लिए; **फले**=फल में; **सक्तः**=आसक्त होने से; **निबध्यते**=बँधते है।

अनुवाद

निश्चल भक्त मेरे प्रति सम्पूर्ण कर्मफल का अर्पण करके अचल शान्ति को प्राप्त हो जाता है, और जो मुझ से युक्त नहीं है, वह कर्मफल की कामना से बँधता है।।१२।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित पुरुष और देह को अपना स्वरूप समझने वाले में भेद बस इतना ही है कि कृष्णभावनाभावित पुरुष श्रीकृष्ण में आसक्त रहता है, जबकि शरीरबद्ध व्यक्ति अपने कर्मों के फल में आसक्त होता है। जो मनुष्य श्रीकृष्ण में आसक्त है और श्रीकृष्ण की प्रीति के लिए ही कर्म करता है, वह निश्चित रूप से जीवन्मुक्त है क्योंकि उसे कर्मफल की कामना नहीं है। श्रीमद्भागवत में परतत्त्व के ज्ञान के बिना अथवा द्वैत-धारणा के साथ कर्म करने को कर्मफल के लिए होने वाले उद्वेग का कारण बताया है। श्रीकृष्ण परम अद्वय तत्त्व भगवान् हैं। अतएव कृष्णभावना द्वैत से मुक्त हैं। जो कुछ भी विद्यमान है, वह सभी कुछ कृष्णशक्ति का कार्य है तथा श्रीकृष्ण सर्वमंगलमय हैं। अतः कृष्णभावनाभावित क्रियाएँ ब्रह्ममयी हैं; दिव्य होने के कारण उनसे बन्धन नहीं होता। इस कारण कृष्णभावनाभावित हो जाने पर जीव शान्ति से आपूरित हो जाता है। परन्तु इन्द्रियतृप्ति के लिए फल का अभिलाषी उस शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। यही कृष्णभावनामृत का रहस्य